REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

" बौद्ध धर्म और डॉ. अम्बेडकर : एक विमर्श "

डॉ. मनोज कुमार

सारांश

डॉ. अम्बेड्कर ने अपने जीवन में तीन महापुरूषों को अपना प्रेरणा श्रोत बताया है, उनमें कबीर, महात्मा ज्योतिवा फूले और भगवान बुद्ध हैं। कबीर ने उन्हें भक्ति भाव प्रदान की। महात्मा ज्योतिवा फूले ने उन्हें अन्याय के विरोध के लिए प्रेरित किया एवं शिक्षा तथा आर्थिक उत्थान का संदेश दिया। भगवान बुद्ध ने मानव जाति के जीवन गत पवित्रता का संदेश एवं मार्गदर्शन दिया। डा० अम्बेडकर ने समाज में समानता लाने के लिए कमजोर लोगों को चेतना, न्याय एवं प्रेरणा प्रदान किया।

डा० अम्बेडकर की लेखनी से विदित होता है कि स्वयं बाबा साहेब ने अपने हीं देश में, अपने ही लोगों के द्वारा दमन, अत्याचार एवं अन्याय जैसी घटनाओं को अपनी आँखों से देखा। जातियता एवं धर्मान्धता की जलती हुई आग में दबे, पिछड़े, दलितों की दुहाई और न्याय को जलकर राख होते उन्होंने देखा। उन्होंने ऊँच–नीच, अमीर–गरीब, काला–गोरा, सवर्ण–अवर्ण, मनु–अमनु के बीच गहरी खाई को देखा।

डा० अम्बेडकर ने हिन्दू समाज में व्याप्त अन्धकार को देखा। इसके परिणाम स्वरूप मन में हिन्दू समाज के विरूद्ध नफरत की आग फैली और यही कारण है कि उन्होंने हिन्दू धर्म को छोड़कर अपने लाखों लोगों के साथ बौद्ध धर्म को स्वीकार किया। गौतम बुद्ध ने भारत में सामाजिक अन्याय के लिए जिम्मेवार रही वर्ण–जाति व्यवस्था पर कड़ा प्रहार किया। उन्होंने इसके तीनों आधारों, यथा ईश्वरीय धारणा, मूलोत्पत्ति और जन्मगत उच्चता का तर्कपूर्ण खंडन किया। उन्होंने कहा, 'न तो तुम श्रुति से, न परंपरा से, न शास्त्र की अनुकूलता से, न वक्ता के भव्य रूप एवं आकार के विचार से और न हीं इस विश्वास से कि श्रमण तुम्हारा गुरू है, किसी काम को करो। जब तुम अपने आप जानो कि यह धर्म कुशल है या अकुशल है, तब तुम इसे करो या छोड़ो। उन्होंने यह भी कहा, 'धर्म नदी पार करने के लिए नाव की तरह है। यदि कोई नदी पार कर नाव को शिर पर उठाकर चलने का विचार करे, तो वह मूर्ख है। इसी तरह यदि कोई धर्म को मन की शुद्धि और शील का साधन बनाने की बजाय अंधविश्वास के साथ उससे चिपटा रहे, तो वह अयोग्य है। इतना ही नहीं उन्होंने अपने अंधानुकरण से भी मना किया। उन्होंने कहा, जो लोग मुझे सर्वज्ञ मानते हैं वे मेरी निंदा करते हैं।

डा० अम्बेड्कर बुद्ध की वैज्ञानिक शिक्षाओं से काफी प्रभावित थे। उन्होंने बुद्ध को अपना पहला और श्रेष्ठ मार्गदर्शक बताया और जीवन के अंतिम दिनों में हिन्दू धर्म को छोड़कर बौद्ध धर्म को अंगीकार कर लिया। उन्होंने कहा है, 'दुनियाँ का कल्याण सिर्फ बौद्ध धर्म से ही हो सकता है। हिन्दू लोगों को अपने राष्ट्र का उत्थान करना हो, तो उन्हें बौद्ध धर्म को स्वीकार करना चाहिए। डा० अम्बेड्कर स्पष्ट कहते हैं कि बौद्ध धर्म से ही मानव को शांति मिल सकती है। अम्बेड्कर ने बुद्ध को एशिया का प्रकाश कहा है। आज खुदाई करके पुरातत्वविद् एशिया के

प्रत्येक देशों से बुद्ध की मूर्त्तियों को निकालकर अम्बेड्कर की वाणियों को सत्य ठहराया है। अतः स्पष्ट है कि आधुनिक युग में डा० अम्बेड्कर एक युग द्रष्टा के रूप में अवतरित हुए हैं।

डा० अम्बेडकर ने न केवल बौद्ध धर्म को अंगीकार किया, बल्कि उन्होंने बौद्ध धर्म में अटूट आस्था भी व्यक्त किया। अम्बेड्कर ने बुद्ध को करूणा का अवतार समझा। अम्बेड्कर के संबंध में निम्न युक्ति मुझे प्रासंगिक लगता है। यह कविता धर्मसेन विधा रत्न ने लिखा है :–

''गौतम के धर्मोपदेश की, एक बूँद ही मिल जाये,
तो मानव अपने जीवन में, सदा–सदा को सुख पाये।
मैत्री मन से, कमल वदन से, व्यक्त हुई है जो वाणी,
अमृतमय है, दुःख वारिणी, वाणी जन–जन कल्याणी।''

बौद्ध धर्म लंबे समय तक भारत का राजकीय धर्म भी रहा और वह समय भारतीय इतिहास का गौरवशाली काल है। बौद्ध धर्म के अनुयायी सम्राट अशोक और बाद के मौर्य शासकों के काल में बौद्ध धर्म को राज–धर्म घोषित किया गया। इस दौरान वर्ण–व्यवस्था के दैवीय विधानों के विरूद्ध न्यायपूर्ण मानवीय विधान निर्मित किए गए और उन्हें लागू करने का प्रयास किया गया। इसमें बहुसंख्यक वर्ग उन्नति के शिखर पर पहुँचकर शासक बन सका था। लेकिन, कालांतर में मौर्य सम्राट वृहदत्त को छलपूर्वक मारकर उनके सेनापति पुण्यमित्र शुंग ने ब्राह्मणवाद की पुनः स्थापना की। उन्होंने बौद्ध धर्म के अनुयायियों पर काफी अत्याचार किये। उन्होंने पाटलिपुत्र और जलंधर के बीच के सारे बौद्ध विहार जला डाले थे। उन्होंने ग्रीकराज बौद्ध मिलिंद की राजधानी स्यालकोट में घोषणा की थी, ''जो मुझे एक बौद्ध भिक्षु का सिर काट कर देगा, उसे मैं सौ सोने की दीनार दूँगा।''[1]

इसी तरह, कई अन्य ब्राह्मवादी शासकों ने भी बौद्ध धर्म के अनुयायियों पर अत्याचार किये। हर्ष के पहले के शैव राजा शशांक ने अनेक बौद्ध विहारों को नष्ट कर दिया। '' उन्होंने बोधगया के बोधिवृक्ष को कटवाकर उसकी जड़ों में अंगार रखवा दिए थे, ताकि वह चैत्यवृक्ष फिर पनप न सके। उधर, हर्ष के शासनकाल में ही जब सिंध का राजा साहसी बीमार पडा, तो उसकी राजसत्ता पर उसके ब्राह्मण मंत्री 'चच' ने अधिकार कर लिया और उसकी रानी से शादी कर ली। फिर, चच ने लहानों और जाटों पर, जो बौद्धधर्मी थे, कई क्रूर प्रतिबंध लगा दिए। इन बौद्धधर्मियों को रेशमी वस्त्र पहनना प्रतिंधित कर दिया गया। उन्हें नंगे पाँव एवं नंगे सिर चलने–फिरने और घोड़ों पर बिना जीन कसे चढ़ने का हुक्म दिया गया। उन्हें इस बात के लिए भी विवश किया गया कि वे ब्राह्मणों और राजा के घर उनकी खिदमत में अपनी बेटियाँ पहुँचाएँ। इसी शती में पांड्य राजा नेडूरमान ने शैवों के इशारे पर दक्षिण भारत में आठ हजार जैन साधुओं की निर्मम हत्या करवा दी थी।''[02]

भारतीय इतिहास के ये तथ्य डॉ. अंबेडकर के इस कथन की पुष्टि हैं कि मुगलों के आने के पूर्व भारत का इतिहास हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म के बीच संघर्ष का इतिहास रहा है। '' ब्राह्मणों और बौद्धों में लगभग चार सौ वर्षों तक लंबा संघर्ष हुआ है। भारतीय धर्म, समाज और राजनीति पर इस संघर्ष की अमिट छाप विद्यमान है। '' कुल मिलाकर, यह स्पष्ट होता है कि बौद्ध धर्म को अक्रांता मुगलों से भी अधिक असहिष्णु हिंदुओं ने नुकसान पहुँचाया। खैर कारण चाहे जो भी रहा हो मुगलकाल आते–आते प्रायः बौद्ध धर्म लुप्तप्राय सा हो गया।

आगे विशेष रूप से आठवीं–नौवी सदी में दक्षिण भारत में आलवारों और नायनारों ने भक्ति आंदोलन के जरिए 'जाति–पाति पूछे नहीं कोई, हरी को भजे सो हरि के होई' का प्रचार किया। यह प्रचार ईश्वरवादी होते हुए भी एकतरह से सामाजिक न्याय का पोषक था।''[03]

इधर, उत्तर भारत में बौद्धों की विरासत को सिद्धों और नाथों ने लोकभाषा के माध्यम से आगे बढ़ने का महत्त्पूर्ण काम किया। सिद्ध सरहपा ने हिंदुओं के बाह्य–आडंबरों और जैनियों के आत्मपीड़न की कड़ी आलोचना की। उन्होंने कहा, ''हिंदू (पाशुपत) घर बैठे दीप जलाते हैं, घंटा बजाते हैं, शीश पर बाल का बोझ लादते हैं, आसन बाँधते हैं और शिष्य के कान में फुसफुसा कर मंत्र बोलते हैं; इसी तरह जैन मलिन वेष धारण करते हैं, अपने को मारकर कष्ट देकर मोक्ष चाहते हैं, केशलुंचन करते हैं। नग्न रहने से मुक्ति मिले, तो सियारों को वह मिल सकती थी। यदि मयूरपंख धारण करने से मुक्ति मिलती, तो मोर को मिल जाती। '' मगर, सिद्धों के आंदोलन को कुमारिल भट्ट एवं शंकराचार्य के (नव) ब्राह्मणवादी पुनरूत्थानवाद ने दबा दिया।'' डॉ. अंबेडकर ने

शंकराचार्य के उपदेशों को हास्यास्पद बताया है। क्योंकि, यह शंकर ही थे, जिन्होंने कहा, 'ब्रह्म है, वही निरंतर है' और उसी शंकराचार्य ने ब्राह्मणवादी समाज की सभी असमानताओं को शिरोधर्य किया '' इससे भारतीय समाज में सामाजिक न्याय की धारा अवरूद्ध हुई।''[04]

'फिर सिद्धों एवं नाथों की यही परंपरा मध्यकालीन भक्ति आंदोलन में पुरजोर ढ़ंग से सामने आई। इस दौरान कबीर, रैदास, दादू, नामदेव, नानक, चोखामल सहजोबाई मीराबाई आदि ने ऊँच–नीच, जाति–भेद और ब्राह्य आडंबरों पर करारा प्रहार किया। इन संतों में से कबीर को डॉ. अंबेडकर ने अपना दूसरा गुरू बताया। '' उन्होंने कहा, 'कबीर को बुद्ध के दर्शन का असली रहस्य पता चल गया था। '' संत कबीर ने बुद्ध की तरह ही धार्मिक कर्मकांडों एवं सामाजिक रूढ़ियों पर करारा प्रहार किया है। कबीर वेद, पुराण व कुरान आदि किसी भी धर्म ग्रंथ को पवित्र व अकाट्य नहीं मानते थे। उन्हें मंदिर, मस्जिद जैसी संस्थाओं, मूर्ति पूजा अथवा दरगाह पर चादर चढ़ाने जैसी परंपराओं में विश्वास नहीं था। उनका कहना था कि लोग पत्थर की पूजा तो करते हैं, लेकिन पत्थर से बनी घर की चाकी, जिसका पिसा हुआ खाते हैं, उसकी पूजा नहीं करते।'' उन्होंने कहा कि आदमी का मन शुद्ध नहीं है, यदि उसकी नीयत साफ नहीं है तो जप, संयम, तीर्थ, व्रत और पूजा–पाठ से कोई लाभ नहीं है; क्योंकि ये बाह्याडंबर एवं ढकोसला हैं। ईश्वर तो लोगों के मन में रहता है, उसे बाहर मंदिर–मस्ज्दि में ढूँढ़ने की जरूरत नहीं है। '' उनके अनुसार सभी मनुष्य एक ही परमात्मा की ज्योति से उत्पन्न हुए हैं, इसलिए सभी समान हैं। सभी माँ के गर्भ सें पैदा होते हैं, चाहे वे ब्राह्मण हों, या शूद्र हों। ब्राह्मण कोई अलग से पैदा नहीं होते। '' कुछ लोग अनावश्यक रूप से अपने को श्रेष्ठ और दूसरों को तुच्छ समझते हैं। '' फिर, यदि ब्राह्मण जनेऊ पहनकर ब्राह्मण बने भी हैं, तो उन्होंने अपनी ब्राह्मणियों को जनेऊ नहीं पहनाया है, इसलिए ब्राह्मणी तो जन्म से शूद्र ही रही, तो ब्राह्मण उनके हाथ का खाना क्यों खाते हैं ? ''[06]

आधुनिक युग में सामाजिक न्याय के लिए कई विचारकों ने काफी प्रयास किये उनमें ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फुले, रामास्वामी नायकर पेरियार, नारायण गुरू, शाहू जी महाराज, गोविंद रानाडे आदि के प्रयासों की अंबेडकर ने सराहना की है। उन्होंने ज्योतिबा फुले को अपना तीसरा गुरू बताया और अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'हू आर दी शूद्राज' उनको समर्पित की। अपने समर्पण में 10 अक्टूबर 1946 को डॉ. अंबेडकर ने लिखा, ''जिन्होंने हिंदू समाज की छोटी जातियों से उच्च वर्णों के प्रति उनकी गुलामी की भावना के संबंध में जागृत किया और जिन्होंने विदेशी शासन से मुक्ति पाने से भी सामाजिक लोकतंत्र की स्थापना अधिक महत्त्वपूर्ण है, इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया, उस आधुनिक भारत के महान 'राष्ट्रपिता' ज्योतिवा फूले की स्मृति को सादर समर्पित। ''[07]

डॉ. अंबेडकर यह मानते थे कि फुले के जीवन–दर्शन से प्रेरणा लेकर ही वंचित समाज की मुक्ति हो सकती है। देश के मंत्री, देश का उद्धार नहीं कर सकते, किंतु जिसे धर्म का उत्तम ज्ञान है, वही व्यक्ति देश का उत्थान कर सकते हैं, राष्ट्रपिता ज्योतिराव फुले, ऐसे ही एक महान धर्म सुधारक थे। '' अन्यत्र फुले के जीवन पर बनी एक फिल्म के उद्घाटन अवसर पर 6 फरवरी 1954 को उन्होंने कहा, 'अब्राह्मण समाज के असली मार्गदर्शक ज्योतिबा फुले ही हैं, उन्होंने ही दर्जी, नाई, महार, मातंग, चमार आदि दलितों एवं पिछड़ों को इनसानियत का पाठ पढ़ाया है। '' ज्योतिबा फुले की धर्मपत्नी सावित्री बाई फुले ने स्त्री–शिक्षा की दिशा में मील के पत्थर का काम किया। डॉ. अंबेडकर द्वारा शिक्षा (विशेषकर स्त्री–शिक्षा) पर जोर देना फुले दंपती (खासकर सावित्री बाई फुले) की प्रेरणा का ही नतीजा है।

अन्त में मैं अपने शोध आलेख के माध्यम से कहना चाहता हूँ कि भारत में सामाजिक न्याय की एक समृद्ध परंपरा रही है और डॉ. अंबेडकर अपने–आपको उससे जोड़कर देखते हैं। '' वे इस परंपरा के मूल्यों एवं संघर्षों से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। यही प्रेरणा उनके स्कूली जीवन में छुआछूत का प्रतिकार, राजनैतिक जीवन में महात्मा गाँधी से तकरार और समग्र जीवन में बौद्ध धर्म के स्वीकार के रूप में सामने आती है। '' बाबा साहेब के विचार आज भी प्रासंगिक है क्योकि उन्होंने आजीवन न्याय एवं समाजिक न्याय के लिए संघर्ष किया है हम यह जन मानस को संदेश देना चाहते हैं कि डॉ. अम्बेदकर के प्रकाश पूंज को अपनाना समय की मांग है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. धर्मवीर भारती : सिद्ध साहित्य, किताब महल, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) प्रथम संस्करण 1955, पृ0 67
2. डॉ. राजकुमार शर्मा : सम्पादकीय, भारतीय चिंतन सृजन का प्रगतिगामी मानवीय पक्ष, पृ0 19

3. डॉ. बी0 आर0 अम्बेडकर : बाबा साहेब अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड.मय, खण्ड 7, पृ0 157
4. डॉ. डी0 आर0 जाटव : भारतीय समाज एवं विचार धाराएँ, प्रथम संस्करण – 1997, नई दिल्ली, पृ0 61
5. रामगोपाल सिंह : सामाजिक न्याय एवं परिवर्तन, पृ0 183
6. कँवल भारती : दलित विमर्श की भूमिका, पृ0 16
7. डॉ. बी0 आर0 अम्बेडकर (हु आर दी शूद्राज), पृ0 समर्पण

डॉ. मनोज कुमार

LBP PUBLICATION